सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर व
रयत शिक्षण संस्था द्वारा संचलित
लक्ष्मीबाई भाऊराव पाटील
महिला महाविद्यालय, सोलापुर

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

2016-2017

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव और महात्मा जोतिबा फुले के जीवन तथा कार्य

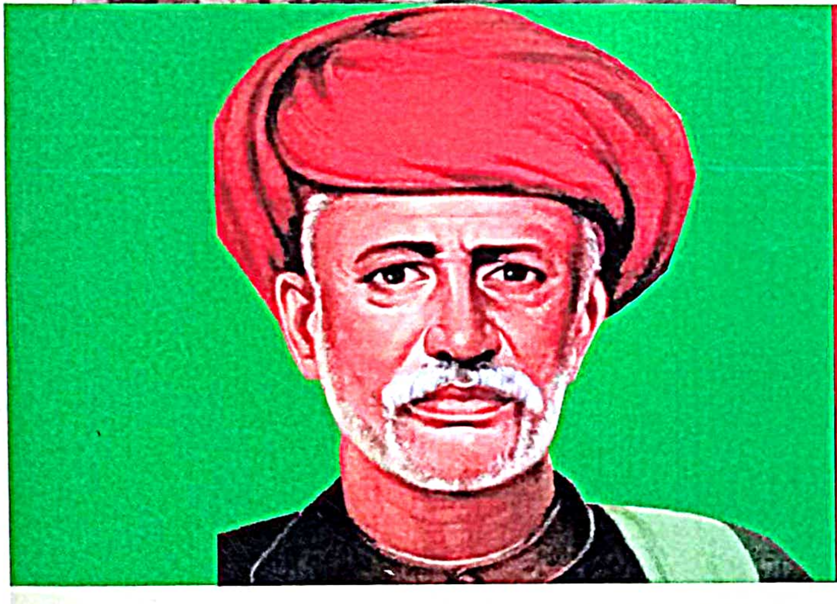

125th Birth Anniversary year of Dr. B. R. Ambedkar

रयत माउली

दिनांक ८ व ९ एप्रिल २०१७

अनुक्रमणिका

१) दामोदर मोरे के साहित्य में आंबेडकरवादी चेतना - वाळवंटे राजकुमार अर्जुन १

२) नैमिशराय की 'महाशुद्र' कहानी - प्रा. एम.जी. कांबळे ७

३) आंबेडकरी विचारधारा का हिंदी आत्मकथा साहित्य पर प्रभाव - संजय गणपती भालेराव ९

४) "मोरी की ईट" कथा साहित्य में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा - प्रा. श्रीमंत जगन्नाथ गुंड, प्रा. मदन नामदेव खरटमोल १३

५) महात्मा जोतिबा फुले के विचारों की प्रासंगिकता - प्रा.डॉ. बी.एन. आदटराव १७

६) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर : विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य - प्रा.डॉ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख २४

७) हिन्दी साहित्यपर डॉ.बाबासाहब आंबेडकर का प्रभाव - प्रा.नदाफ ए.एस. २७

८) हिंदी दलित आत्मकथाओं पर डॉ. आंबेडकर के विचारों का प्रभाव डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे २९

९) 'छप्पर' उपन्यास पर अंबेडकरवादी विचारधारा का प्रभाव - प्रा.डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड ३५

१०) 'डॉ.बाबासाहेब आम्बेडकर :- विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य' - डॉ.मनिषा साळुंखे ४०

११) आम्बेडकरी विचार : दलित आत्मकथा - डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर ४४

१२) 'शंबूक की हत्या' नाटक पर डॉ. आम्बेडकर के विचारों का प्रभाव - प्रा. [illegible] बालाजी गोविंदराव ४७

१३) डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों का आधुनिक हिंदी काव्य पर प्रभाव - प्रा. मारुफ मुजावर ५०

१४) अम्बेडकरी विचारों का हिन्दी काव्य पर प्रभाव - डॉ. वडचकर एस.ए. ५४

१५) महात्मा फुले के जीवन कार्य - प्रा. डॉ. सौ. फैमिदा शब्बीर बिजापूरे ५८

१६) आंबेडकरी विचारधारा का हिंदी कथा साहित्य पर प्रभाव - सुश्री - [illegible] शिंदे । श्री. प्रकाश रामचंद्र शिंदे ६१

१७) ओमप्रकाश वाल्मिकी के 'जूठन'पर डॉ. आंबेडकर के विचारों का प्रभाव - डॉ. संघप्रकाश दुड्डे ६४

१८) महात्मा जोतिबा फुले का सामाजिक कार्य - प्रा. डॉ. तुकाराम वैजनाथराव चाटे ६७

१९) हिंदी कथा साहित्य में अम्बेडकरवादी विचारधारा - इसुफअल्ली महमंद शेख ६९

२०) वाल्मीकि के साहित्य में चित्रित समाज - डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव ७१

२१) महात्मा जोतिबा फुले का शैक्षिक कार्य और विचार - प्रा. मुंडे .डि. के ७४

२२) माताप्रसाद के नाटकों में अम्बेडकरी विचारधारा : विशेष संदर्भ 'तडप मुक्ति की' - डॉ.भगवान एन.जाधव ७६

२३) डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित हिन्दी दलित आत्मकथा - डॉ. प्रमोद परदेशी ८०

२४) "मराठी दलित आत्मकथाओं में चित्रित पात्रों पर आंबेडकरवादी विचारों का प्रभाव" - लक्ष्मण बब्रुवान उपाडे ८४

२५) "दलित जीवन की पिडा और 'मुक्तिपर्व' उपन्यास " - डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ ८७

२६) विषय : डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर विचारधारा का साहित्य पर प्रभाव - प्रा. दत्तात्रय महादेव साळवे ९१

२७) 'उजास' नाटक में अभिव्यक्त डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के विचार - डॉ प्रशांत रामचंद्र नलवडे ९४

२८) हिंदी दलित आत्मकथा साहित्य पर अंबेडकरी विचारधारा का प्रभाव - डॉ. एस. एल. मुनेश्वर ९९

२९) महात्मा फुले के जीवन कार्य - प्रा.सौ.रईसा मिर्झा १०१

३०) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विचारधारा : हिंदी नाटक में स्त्री प्रतिमा - प्रा.डॉ. प्रतिभा आनंदराव जावळे १०३

Wadkudkar (ACS) Sonpeth Dist. Parbhani

ISBN No. 978-81-921752-9-4

अम्बेडकरी विचारों का हिन्दी काव्य पर प्रभाव

डॉ. वडचकर एस.ए.
कै. रमेश वरपुडकर महा. सोनपेठ
जि. परभणी
email : sayaliswapnilwsa@gmail.com

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

हिंदी समीक्षा का इतिहास बहुत बड़ा रोचक है! अब तक की अपनी आयु में हमने अलग-अलग समीक्षा के प्रवाह देखे! किंतु आज के तीव्र गति से बदलते समय में साहित्य को विमर्शों में बाँटने का नया जामा शुरू है! हिंदी कथा साहित्य, उपन्यासविद्या, नाटक, काव्य आदि में जाति-व्यवस्था भारतीय समाज पर लगा एक कलंक है! जिसके कारण मानव - मानव को हिनता की दृष्टी से देखता है! कुछ स्वार्थी लोंगों ने अपनी प्रभुसत्ता को बनाए रखने के हेतु धर्म और मर्यादा की आड में परंपरा का प्रचलन किया और उसे दृढ़ और विश्वस्त बनाया! मनु ने चार वर्णों का प्रचलन किया! उसमें ब्राम्हणों और क्षत्रियों की प्रभुसत्ता थी! वैश्यों का काम जीवनोपयोगी वस्तु का निर्माण और सबसे निम्न जिसकी उत्पत्ती पैरों से हुई ऐसा है, जो केवल उच्चवर्णियों की सेवा करे वह गतजन्म का पापी समझा गया! इन निम्न अस्पृश्य, शुद्र वर्ग के उत्थान के लिए उसे मानवीय अधिकार दिलाने के लिए कई महापुरूषों ने अपना जीवन समर्पित किया! फुले, आंबेडकर के विचार आंदोलन केवल महाराष्ट्र में ही नहीं संपूर्ण देश में, देश के कोने-कोने में फैल गये! उसका साहित्यिक रूप मराठी भाषा से शुरू होकर विभिन्न भाषा, विभिन्न प्रदेश, विभिन्न विधाओं में देखा जा सकता है!

प्रत्येक साहित्यिक आंदोलन की तरह ही अम्बेडकरवादी विचारधारा से प्रेरित होकर निश्चित तौरपर तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितीयों को आत्मसात करके मराठी, हिन्दी, तेलगु आदि भाषाओं में साहित्य निर्माणं होने लगा! हिंदी साहित्य के आरंभ से ही काव्य में दलित चित्रण दिखाई देता है! किंतु वह फुटकर कविताएँ, दोहे, छंद आदि लिखे पढे जाते थे! धीरे-धीरे हिंदी कविता अपनी धीरता, गंभीरता, संवेदनशीलता लिए हुए आगे बढ़ती रही! आज हिंदी दलित कविता में विशुध्द रूप से विद्रोह, आक्रोश तथा संघर्ष के स्वर दिखाई देते है! आधुनिक दलित कविता के बारे में पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी का यह कथन दृष्टव्य है 'मेरी दृष्टि में आधुनिक दलित कविता आक्रोश, विद्रोह और संघर्ष के सातत्य सौन्दर्य की कविता है!' डॉ. बाबासाहाब आंबेडकर के समानता एवं बन्धुता भाव, शिक्षा, संगठन एवं संघर्ष के विचारों से प्रोत्साहित होकर रामकुमार वर्मा ने 'एकलव्य' महाकाव्य डॉ. जगदीश गुप्तने 'शम्बूकवध', सुरेश मेहता ने शबरी' नागार्जुन ने 'हरीजन गाथा' धुमिल की 'मोचीराम' कविताए चर्चित हुई!

महात्मा गांधी जी के अधुतोध्दार अभियान से प्रभावित होकर मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, हरिऔध, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, सुमित्रानंदन पंत, निराली आदि कवियों ने अधुतों के प्रति स्नेह और सहानुभूति प्रकट करते हुए उनके उध्दार तथा जागृति के यथार्थ दृश्य अंकित करने का प्रयास किया है! रामधारी सिंह दिनकर' की 'रश्मिरथी' का कर्ण जाति से स्वंय को श्रेष्ठ घोषित करनेवालों को फटकारते हुए कहता है कि 'मस्तक ऊँचा किए जाति का नाम लिए चलते हो! पर अधर्ममय शोषण के बल से सुख में पलते हो! छल से माँग लिया करते हो अगूँठे का दान तथा पाते हैं सम्मान तपोबल से भूतल पर शूर! जाति-जाति का शोर मचाते केवल कायर क्रूर! माखनलाल चतुर्वेदी ने भी अस्पृश्यों को अत्याचार के विरूध्द क्रान्ती के लिए आव्हान किया है!

'दलित अत्याचार न सह तू!
अपनी हार हार न सह तू!!',

डॉ. दयानंद 'बटोही' ने दलित कविता में अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश की है! उनका 'यातना की आँखे'

ISBN No. 978-81-921752-9-4

यह काव्य संग्रह सामाजिक विसंगतियों को अभिव्यक्ति देता है! उनकी 'द्रोणाचार्य सुने! उनकी परंपराएँ सुने!' इस कविता में उन्होंने विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक में दलित छात्रों के साथ हो रहे अन्याय को अभिव्यक्ति दी है! तो कँवल भारती का 'तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती' सुरजपाल चौहान का 'प्रयास' डॉ. कुसुम वियोगी का 'व्यवस्था के विषधर' ओमप्रकाश वाल्मीकी के नाम स्मरणीय है! हिंदी दलित कविता के हस्ताक्षर ओमप्रकाश वाल्मीकी जी के 'सदियों का संताप' और 'बस्स बहुत हो चुका' में धर्म, दर्शन और पौराणिक मिथकों की पुर्नव्याख्या है! उनकी कविता 'शायद आप जानते हो'

"तुम्हारे रचे शब्द
तुम्हें संगे साँप बनकर
गंगा किनारे कोई वृक्ष ढूँढलो
कर लो भागवत का पाठ
आत्म तुष्टि के लिए
कहीं अकाल मृत्यु के बाद!"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

दलित कविता सामाजिक सम्मान की न्याय की माँग से ही जन्मी है! सामाजिक भेदभाव, ऊँच नीच और सामाजिक उत्पीड़न से उपजा दर्द दलित कविता की सामाजिक चेतना के केन्द्र में है! इसमें दलितों के साथ किया जा रहा पशु से भी बदत्तर व्यवहार ही कविता का हथियार है! युगों-युगों से प्रताडित, शोषित, वंचित मानव जब स्वयं को साहित्य से जोड़कर सामाजिक चेतना को उजागर करता है तब दलित कविता उसकी निजता को पहचानने की अभिव्यक्ति बन जाती है! वर्ण व्यवस्था और जातिवाद से उपजे अवसाद ने दलित कविता में सामाजिक विद्रोह का रूप धारण कर लिया है!

''स्वीकार्य नहीं मुझे
जाना
मृत्यु के बाद
तुम्हारे स्वर्ग में
वहाँ भी तुम
मेरी जातिसे ही!"

''बस्स बहुत हो चुका" में ओमप्रकाश वाल्मीकी जी ने दलित वर्ग की यातना से उपजे क्रोध और आक्रोश को व्यक्त कर सामाजिक विद्रुपता से उपजी वेदना, विचार, विद्रोह और निर्माण के तत्व को स्पष्ट कर दलित काव्य की हर चेतना को शब्द दिए हैं-

''जब भी देखता हूँ मैं
झाडू या गन्दगी से भरी बाल्टी-कनस्टर
किसी हाथ में
मेरी रंगो में
दहकने लगते हैं
यातनाओं के कई हजार वर्ष एक साथ!"

कवि ओमप्रकाश वाल्मीकी के 'अब और नहीं' इस कविता संग्रह में से श्रेष्ठ' कविता ब्राम्हणी अहंकारी मनोवृत्ती को दर्शाते हुए व्यवस्था से सवाल पूछती है! कविता में आक्रोश जनित गंभीर अभिव्यक्ती है! प्राचीन काल में भारत में मनुवादी सामाजिक व्यवस्था थी! इस मनुवादी व्यवस्था ने कर्म को श्रेष्ठ न मानते हुए वर्ण को श्रेष्ठ माना है! वेद में चार वर्ण माने गये, जिसमें ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र! चारों की निर्मिती क्रमशः मुखसे, बाहु से, जाँघ से और शुद्र की पैरों से! इस

ISBN No. 978-81-921752-9-4
प्रकार से वर्णव्यवस्था बनाकर मनुष्य को जानवर से भी बढ़कर जुल्म ढाये है! तब कवि ओमप्रकाश परेशान हो जाते है और व्यवस्था से सवाल पुछते है!

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

"ताज्जुब है!
मनुष्य का जन्म तो होता है
सिर्फ माँ के गर्भ से
फिर आप कैसे पैदा हो गये
ब्रम्हा के मुख से?"

'होली' कविता में कँवल भारती कहते है कि, मैं हिंदू धर्म का विरोधी नही हूँ जिसमें असमानता, अलगाँव, घृणा, अमानवीय व्यवहार, अस्पृश्यता आदि के विरोध में विरोधी हूँ! क्योंकी हजारों साल से हिंदू संस्कृति का साम्राज्य दलितों की चेतना पर राज करता रहा है और अशिक्षा के अभाव में आज भी उनके मन-मस्तिष्क पर छाया हुआ है, ऐसे ब्राम्हणवाद का विरोधी हूँ! दलित सांस्कृतिक चेतना ऐसे साहित्य का विरोध करती है जो अमानवीय संस्कृती-सभ्यता का निर्माण करता है! अब दलित कविता अपनी मूल संस्कृति और सभ्यता में अपनी पहचान और अस्मिता को खोज रही है, जिसे हजारों साल पहले बर्बर और असभ्य हमलावर आर्योने नष्ट कर दिया था और उनकी जगह खड़ी की गई है ऊँच - नीच, वर्ण जाति की बड़ी-बड़ी दीवारे! ऐसे स्थिती में उपजे अमानवीय उत्पीड़न की मार झेले 'दलित को फिर रामराज्य' के लिए लड़ाने की साजीश की जाती है, तब दलित कविता प्रश्न करती है-

"हिन्दुत्व राज्य की नगरी में
किन्तुं, मेरा घर-द्वार कहाँ है?
तुम चाहो राम राज्य आए
तुम श्रेष्ठ शुद्र मै बन रहूँ
तुम को सारे अधिकार रहे
मैं वर्जनाओं में लढा रहूँ!"-

जयप्रकाश कर्दम दलित कविता में आर्थिक विफलता से दलित समाज पर थोपे गए कामों के प्रति घृणा की भावना है, क्योंकि यही काम उसके जीवन के आधार बनाए गए हैं! इस अन्याय का जिक्र दलित कविता में सर्वत्र मिलता है! कालीचरण स्नेही की कविता यह अन्याय व्यक्त वेदना से युक्त करती है!

"मेरी अधेड़ उम्र की माँ
हर रोज सबेरे-सबेरे
टोकरी और झाडू लेकर
निकल जाती है
सडकें बुहारने
पाखाना साफ करने
पुरी तल्लीनता से लग जाती हैं
सफाई के काम में
मिलती है दो रोटी इनाम में!"

दलित समाज को छोटे-छोटे अंधविश्वास में फँसाकर किस प्रकार उसको समृध्दि से दुर रखा गया! इस पर प्रतिक्रि व्यक्त करते हुए सुमनाक्षर जी ने कविता में आर्थिक चेतना को प्रस्तुत किया है!

ISBN No. 978-81-921752-9-4

"मेरे परदादा मर गए जुठन खाते
उतरे चिथड़े पहनते
खेत बोते-जोतते
इसे पूर्व जन्म का फल मानते-मानते
इनका खून चूसते-चूसते
धर्म का भय दिखलाकर
नीच कर्मो का फल बताकर
पर
अब मै पूर्व जन्म नही वर्तमान देखता हूँ!"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

निष्कर्षता कहा जा सकता है कि दलित कविता की राजनीतिक चेतना, के संचार का द्योतक है! दलितों ने अत्याचार, शोषण, उत्पीडन, अपमान, भ्रष्टाचार जाति और वंशवाद जैसे बिंदुओं को आधार बनाकर रचना धर्मिता का संचार किया है! संविधान ने देश के आर्थिक - सामाजिक स्तर पर समाजवाद की ओर गति का अनुमोदन किया है, जिसका उद्देश समाज में समता, बंधुत्व और न्याय के आधारपर दलित तथा शोषित जनता को मुलभूत अधिकार प्राप्त हो और इस की प्राप्ती के लिए राज्य कार्य करें और यह तब होगा जब राज्य का संचालक दलितों के समान अधिकार के पक्ष में हो!

संदर्भ

१)	मैथिलीशरण गुप्त	-	पंचवटी
२)	रामधारी सिंह दिनकर	-	रश्मिरथी
३)	माखनलाल चतुर्वेदी	-	हिम किरीटनी
४)	धूमिल	-	मोचीराम कविता
५)	ओमप्रकाश वाल्मीकि	-	बस्स बहुत हो चुका
६)	कँवल भारती	-	तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती
७)	जयप्रकाश कर्दम	-	गूँगा नहीं था मैं
८)	सोहन पाल सुमनाक्षर	-	अंधा समाज और बहरे लोग

□□

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani